AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
National

ISSN: 2321-3914
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor:11.9
Subject: Sanskrit

ऐतिहासिक महाकाव्य रामायण में नैतिक विचार

AMITAVA PAHARI
Research Scholar
Enrollment No.
AR19BPHDSA004
SANSKRIT
Dr. HANS RAJ MEENA
SARDAR PATEL UNIVERSITY, BALAGHAT

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNALIS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OFCONTENT AMENDMENT /ORANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE /UPDATES, IHAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION. FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE.(COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

अमूर्त

यह पेपर ऐतिहासिक महाकाव्य रामायण में समाहित नैतिक विचारों पर ध्यान केंद्रित करता है, जो आधुनिक समाज में उसके महत्व और प्रासंगिकता का अध्ययन करता है। धर्म की अवधारणा पर निर्मित, कथा वफादारी, भक्ति, महिलाओं के प्रति सम्मान, अभिमान के परिणाम, और क्षमा की शक्ति जैसे विषयों को जांचती है। पात्रों और उनके कार्यों के माध्यम से, रामायण नैतिकता को संरक्षित करने, नैतिक संदेहों का समाधान करने, और समरसता को पोषित करने पर समयहीन ज्ञान प्रदान करता है। यह अध्ययन समृद्ध सांस्कृतिक और दार्शनिक परंपराओं पर आधारित है, जो रामायण के नैतिक आदर्शों की स्थायित्व की प्रकाश डालता है जो व्यक्तियों को धार्मिक आचरण और समाजिक समरसता की ओर मोड़ते हैं।

कीवर्ड: नैतिक विचार, निष्ठा और भक्ति, क्षमा और मुक्ति, अहंकार और आवेग के परिणाम

परिचय

रामायण प्राचीन भारतीय साहित्य का एक श्रेष्ठ काव्य है, जिसे अपनी आकर्षक कहानी और गहरे नैतिक और धार्मिक प्रभावों के लिए प्रशंसा की जाती है। महर्षि वाल्मीकि द्वारा लिखी गई इस कथा का प्रभाव

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
National
ISSN: 2321-3914
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor:11.9
Subject: Sanskrit

पीढ़ियों और राष्ट्रों के बीच महसूस होता है। रामायण जीवन की जटिलताओं में न्याय और नैतिकता की ओर मार्गदर्शन करता है।

इसके पात्रों के कठिनाइयों और विजयों के माध्यम से, रामायण आज के समय में महत्वपूर्ण विषयों का अन्वेषण करता है। यह धर्म की जांच करता है, जो व्यक्ति के व्यवहार और कर्तव्यों को मार्गदर्शित करता है। राम, लक्ष्मण, और सीता सभी नैतिक चुनौतियों और नैतिक निर्णयों का सामना करते हैं, जो अच्छे और बुरे के बीच के अनंत संघर्ष को प्रकट करते हैं।

इसके अतिरिक्त, रामायण मानव संबंधों और सामाजिक आदर्शों को प्रकाशित करता है। यह वफादारी, समर्पण, और अधिकार को जोर देता है, और गर्व, लालच, और धोखेबाजी के खतरों को उजागर करता है। महाकाव्य रावण और कैकेयी की यथार्थ चित्रण के साथ घमंड और लालच के खिलाफ चेतावनी देता है।

रामायण में क्षमा और पुनर्मूल्यांकन को भी जोर दिया जाता है, जो दिखाता है कि बुरे के भी बदल सकते हैं। राम के दुश्मनों को क्षमा करना और सीता का अपने पति में निरंतर विश्वास अमान्यता को अद्भुत प्रेरणा प्रदान करता है, जो हमें व्यक्तिगत शिकायतों को पार करने और शांति और सद्भाव की खोज में प्रेरित करता है।

रामायण आज के तेजी से बदलते, नैतिक भ्रांतियों से भरे समाज में प्रेरणा और मार्गदर्शन प्रदान करता है। इसके नैतिक सिखाएं उन सभी के लिए आकर्षक होती हैं जो सत्यनिष्ठा और दया के साथ समकालीन जीवन का समाधान करने का प्रयास कर रहे हैं। यह अध्ययन रामायण में नैतिक सिद्धांतों की खोज करता है ताकि इसकी निरंतरता और महत्ता को प्रदर्शित किया जा सके और पाठकों को विचार करने और नैतिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित करे।

अध्ययन के उद्देश्य

- रामायण में धर्म के प्रतिरूपण का विश्लेषण करना और इसके महत्व को समझना, जो पात्रों के कार्यों और निर्णयों को आकार देने में कैसे मदद करता है।
- रामायण में वफादारी और समर्पण के विषय का अध्ययन करना, हनुमान, लक्ष्मण, और सीता जैसे पात्रों पर ध्यान केंद्रित करके, और उनके अपने संबंधों और भूमिकाओं में अटल समर्पण का उल्लेख करना।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
National
ISSN: 2321-3914
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Sanskrit

- रामायण में घमंड और आवेग के परिणामों का अध्ययन करना, जैसा कि रावण और कैकेयी जैसे पात्रों के उदाहरणों का प्रयोग करके, अनियंत्रित महत्वाकांक्षा और स्वार्थीता के विनाशकारी प्रभाव को स्पष्ट करना।

धर्मः शाश्वत नियम

रामायण का मूलभूत तत्व धर्म की अवधारणा है, जिसे अक्सर नैतिकता या कर्तव्य के रूप में अनुवादित किया जाता है। महाकाव्य में पात्र निरंतर अपने धर्म को बनाए रखने का सामना करते हैं, चाहे वह एक शासक हो, एक पति, एक भाई या एक अधीनस्थ हो। प्रमुख पात्र, भगवान राम, धर्म के प्रति अडिग अनुपालन का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, यहाँ तक कि वे व्यक्तिगत लागत के महंगे मुल्य के बावजूद भी। उनके राज्य से निष्कासन और उसके बाद के परीक्षण धर्म की मांग के प्रमाण के रूप में काम करते हैं।

- ***भगवान राम का वनवासः*** जब भगवान राम से राजगद्दी का दावा छोड़कर चौदह साल के लिए वनवास में जाने का आदेश दिया जाता है, तो उन्होंने तत्काल इस आदेश को स्वीकार किया, बिना किसी हिचकिचाहट के, अपने पिता के वचन का सम्मान करना एक पुत्र का कर्तव्य मानते हुए। उनका प्रसिद्ध कथन उनकी सौतेली माता कैकेयी के प्रति उनके धर्म के प्रति अक्षुण्ण समर्पण को दर्शाता है; ***''रघुकुल रीत सदा चली आई प्राण जाए पर वचन ना जाए''***
- ***भरत की दुविधाः*** जब भरत को अपनी मां कैकेयी के भूमिका के बारे में पता चलता है, जिसमें राम को वनवास में भेजा जाता है और उसके बाद राजा के रूप में शासन किया जाता है, तो वह अपने भाई से प्रेम और राजगद्दी के सही उत्तराधिकारी के रूप में अपने कर्तव्य के बीच उलझ जाता है। अंत में, भरत धर्म को उत्तारदायित्व के रूप में पालन करते हुए राजगद्दी को स्वीकार करने से इनकार करता है और इसके बजाय निर्धारित करता है कि राम की वापसी तक उसकी अनुपस्थिति में शासन करेगा।
- ***हनुमान का समर्पणः*** भगवान राम के निष्ठावान भक्त हनुमान, अपने अटल समर्पण और बेसहारा सेवा के माध्यम से धर्म के आदर्श का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। उनका साहसी समुद्र पार करना और लंका में सीता की खोज करना उनकी प्रिय भगवान के प्रति अपने कर्तव्य को पूरा करने के लिए उनकी प्रतिबद्धता का प्रदर्शन करता है।

वफादारी और भक्ति

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
National
ISSN: 2321-3914
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Sanskrit

रामायण में वफादारी और भक्ति का विषय मुख्य है, जो हनुमान, लक्ष्मण, और सीता जैसे पात्रों द्वारा प्रतिनिधित है। हनुमान का अडिग समर्पण राम के प्रति, जिसे उनकी बेभीड़ी लंका के समुद्र पार करके प्रस्तुत किया गया है, स्वार्थहीन सेवा और भक्ति की शक्ति का प्रदर्शन करता है। लक्ष्मण का अटल समर्पण अपने भाई राम के प्रति, जिसे उसका उनके साथ वनवास में सहयोग करने और कठिनाइयों का सामना करने की इच्छा के द्वारा प्रतिनिधित किया गया है, पारिवारिक वफादारी के महत्व को अधिभूत करता है।

हनुमान का वचनः पहली बार भगवान राम से मिलने के बाद, हनुमान उनके प्रति अपनी अटल वफादारी और भक्ति का व्यक्त करते हैं। उन्होंने कहा, *''जब मैं किसी व्यक्ति से मिलता हूँ, तो मैं तुरंत उसके चेहरे को देखता हूँ और उसे अपना नाम, मेरे पिता का नाम, मेरी मां का नाम, और मेरा जन्म स्थान बता देता हूँ। और अब जब मैंने आपके चेहरे को देखा है, तो मैं आपके लिए कुछ भी करने के लिए तैयार हूँ।''*

लक्ष्मण का त्यागः जब राम वनवास में जाने का निर्णय करते हैं, तो लक्ष्मण उनके साथ जाने की बात करते हैं, भले ही राम को उन्हें रोकने की कोशिशें की जाए। लक्ष्मण राम के प्रति अपनी भक्ति को व्यक्त करते हैं, कहते हैं, *''मैं तुम्हें अकेले पीड़ा में देखने को नहीं सह सकता, मेरे भाई। जहाँ तुम जाओगे, वहाँ मैं जाऊंगा। तुम्हारी खुशी मेरी खुशी है, और तुम्हारा दुःख मेरा दुःख है।''*

सीता का व्रतः जब राम के साथ अलग होने की संभावना का सामना होता है, तो सीता उनके प्रति अपनी अटल भक्ति और वफादारी को व्यक्त करती है। उन्होंने कहा, *''जहाँ भी आप जाएं, मेरे प्रभु, मैं आपका अनुसरण करूँगी। मैं कठिनाइयों या खतरों का सामना करने के बावजूद भी, कभी भी आपके साथ नहीं छोड़ूंगी। मेरा आपके प्रति प्यार कोई सीमा नहीं जानता है।''*

अहंकार और आवेग के परिणाम

रामायण में रावण और कैकेयी जैसे पात्रों के माध्यम से घमंड और आवेगी व्यवहार के खतरों का अन्वेषण किया जाता है। रावण की अभिमान और शक्ति की इच्छा अंततः उसके पतन में ले जाती है, जो अनियंत्रित महत्वाकांक्षा के नाशनात्मक परिणामों को उजागर करता है। उसी तरह, कैकेयी का राजा दशरथ के वरदान का स्वार्थी उपयोग परिवारिक असहमति और दुर्घटना का कारण बनता है, जो लालच और परिवर्तन की चाल में झुकने के परिणामों को जोरदारता से प्रकट करता है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
National
ISSN: 2321-3914
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Sanskrit

- ***रावण की घमंडपूर्ण घोषणाः*** रावण, अपने अहंकार और शक्ति की इच्छा में, अपने भाई विभीषण को एक घमंडपूर्ण घोषणा करते हैं। उन्होंने कहा, *''मैंने तीनों लोकों को जीत लिया है, देवताओं को पराजित किया है, और सभी पर महारत हासिल किया है। कौन मुझे चुनौती देने का साहस करेगा? मैं अजेय हूँ!''*
- ***कैकेयी की मांगें:*** जब कैकेयी को राजा दशरथ द्वारा उसे दी गई दो वरदानों के बारे में पता चलता है, तो उसे चाहिए कि राम को वनवास में भेजा जाए और भरत को राजा के रूप में ताज किया जाए। अपनी अपनी भौया और दूसरों की आपत्तियों के बावजूद, दशरथ की प्रार्थनाओं के बावजूद, कैकेयी अपनी मांगों में अटल रहती है, अपनी अपनी स्वार्थपरता के द्वारा प्रेरित।
- ***रावण की सीता को उल्टावः*** रावण, अपने अहंकार और सीता को प्राप्त करने की इच्छा में, उसे अपनी रानी बनाने के लिए प्रेरित करने का प्रयास करता है। उसने उसे चिढ़ाते हुए कहा, *''तुम राम के साथ क्यों चिपकी हुई हो, जो तुम्हें बचा नहीं सकता है? मेरे साथ आओ, और मैं तुम्हें लंका की रानी बना दूंगा। तुम्हारा हाल किसी निरपेक्ष व्यक्ति के साथ होने के लायक नहीं है।''*

क्षमा और मोक्ष

रामायण में एक बार–बार आता है की क्षमा और पुनरुद्धार की शक्ति। उस पर चोट लगने के बावजूद, राम अपने दुश्मनों के प्रति करुणा और उदारता दिखाते हैं, उन्हें पुनरुद्धार का अवसर देते हैं। उनकी रावण के प्रति क्षमा उनके अंतिम क्षणों में एक गहरी समझ को प्रकट करती है, जो पास्त अपराधों के बावजूद हर जीव में निहित भलाई के गहरे बौद्धिक को दर्शाती है।

राम की क्षमाः जब रावण युद्धभूमि पर घातक रूप से घायल पड़ा हुआ होता है, तो राम उसके पास करुणा से आते हैं और उसे बुद्धिमत्ता की बातें देते हैं। उन्होंने कहा, *''यद्यपि तुमने बहुत से पाप किए हैं और महान पीड़ा का कारण बनाया है, मुझमें तुम्हारे प्रति कोई नफरत नहीं है। तुम्हें अपने अंतिम क्षणों में शांति प्राप्त हो और मुक्ति प्राप्त हो।''*

सीता की क्षमाः जबकि उसे बेवजह विश्वासघाती के रूप में आरोपित किया गया और परीक्षणों का सामना किया गया, सीता उन्हें क्षमा करती हैं जिन्होंने उसकी शुद्धता और पवित्रता पर संदेह किया। उन्होंने कहा, *''मैं उन लोगों के प्रति कोई बुराई नहीं रखती जिन्होंने मुझ पर अन्याय किया। मेरा राम की न्यायमूलकता में विश्वास अटूट बना रहता है, और मैं उसके न्याय पर सब कुछ करती हूँ।''*

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
National

ISSN: 2321-3914
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Sanskrit

निष्कर्ष

रामायण मानव आचरण और समाज को आकार देने में नैतिक विचारों के स्थायित्व के लिए एक अविनाशी साक्षी के रूप में खड़ा है। इसके समृद्ध पात्रों और कथाओं के माध्यम से, महाकाव्य धर्म, वफादारी, सम्मान, विनम्रता, और क्षमा पर अनमोल सीखें प्रदान करता है। नैतिक अस्पष्टता और नैतिक विचारों के विविधताओं से भरी दुनिया में, रामायण एक मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में कार्य करता है, व्यक्तियों को गुण ग्रहण करने के लिए प्रेरित करता है, धर्म की रक्षा करता है, और सर्वोत्तम के लिए प्रयास करता है। हम समकालीन जीवन की जटिलताओं का सामना करते हैं, रामायण में निहित नैतिक आदर्श अब भी गहराई, ज्ञान, और अविनाशी मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, जो उसे खोजने वाले सभी को संतोष, ज्ञान, और समय के साथ मार्गदर्शन करते हैं।

संदर्भ

- नारायण, आर, के. रामायणरू भारतीय महाकाव्य, पेंगुइन, 2006 का एक संक्षिप्त और आधुनिक गद्य संस्करण
- देबलीना सेनगुप्ता. (2021)। मंत्रमुग्धता का जंगलरू मिथोपोएसिस में एक पुनर्कथन गाथा। टर्किश ऑनलाइन जर्नल ऑफ क्वालिटेटिव इंक्वायरी (टीओजेक्यूआई), 12(8), 2042–2055। http///C:/mi;ksxdrkZ/pc/MsLdV,i/'kSysaæ सिंहध्बी– 1 सीता अंग्रेजी लेटध्4905.pdf

ISSN: 2321-3914
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Sanskrit

- प्रथमा, आई. पी. ए. (2023, अप्रैल)। करुणा, प्रेम और सम्मान के सार को अपनानारू रामायण से सबक। इकोहिस मेंरू हिंदू अध्ययन पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (खंड 1, संख्या 1, पृ. 520–537)।
- दिवाकरुनी, सी.बी. (2019ए)। जादू का जंगल. हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स में। एडवर्ड क्विन. (2000)। साहित्यिक और विषयगत शब्दों का एक शब्दकोश। नई दिल्लीरू चेक मार्क बुक्स, 1–368।
- जैन, जे. (2017)। पितृसत्ता में महिलाएँरू अंतर–सांस्कृतिक पाठन। रावत प्रकाशन, 1–308। मार्कस मॉर्टन. (1997)। ष्सनीवेल उपन्यासकार चित्रा बनर्जी श्मसालों की मालकिनश और भौतिक दुनिया की भ्रामक शक्ति के बारे में बात करती हैं। मेट्रो एक्टिव, 8–14।
- ओ. ओटुआगा, ओ. ओ. एफाजेम्यू, और ई. ओ. ई. (2011)। नाइजीरिया में तृतीयक संस्थानों में व्यावसायिक विषयों को पढ़ाने के मिथक और वास्तविकताएँ। मेडिटेरेनियन जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, 5(2), 87.
- क्विन, ई. (2000). साहित्यिक और विषयगत शब्दों का एक शब्दकोश। नई दिल्लीरू चेक मार्क बुक्स, 167.
- सेन, एन.डी. (2011)। जब महिलाएं दोबारा सुनाती हैं रामायण. मानुषी, 108, 1–1827.
- परमार, एच. (2001)। रामायण में धर्म के बारे में वाल्मिकी का दृष्टिकोण। रामायण पर आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य, 233।
- बोस, एम. (एड.). (2004)। रामायण पुनः प्रकाशित. ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस।
- गुट्टल, वी. (1986)। इलियड में वीर आदर्श और रामायण में धर्म का आदशर्रू एक युग्म स्थिति। कर्नाटक विश्वविद्यालय का जर्नलरू मानविकी, 30, 72.
- रिचमैन, पी. (1995)। महाकाव्य और राज्यरू रामायण की प्रतिस्पर्धी व्याख्याएँ। लोक संस्कृति, 7(3), 631–654.

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, here by, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments/updates, I have resubmitted my paper for publication on the

ISSN: 2321-3914
Volume: 4 Issue:3
December 2023
Impact Factor: 11.9
Subject: Sanskrit

same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriacontane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/ Guide Name/ Educational Qualification/ Designation/ Address of my university/ college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission /Submission /Copyright /Patent/Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the database due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. Atthe time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents(Andhra/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper maybe rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that As the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds Any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper maybe removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

AMITAVA PAHARI
Dr. HANS RAJ MEENA

*****